कृतिका भाग 2 (कक्षा 10)

संपूर्ण NCERT प्रश्नोत्तर एवं हल (Solutions)

Schorbit

पाठ 1: माता का अँचल

📖 पाठ का सार (Summary)

शिवपूजन सहाय द्वारा रचित 'माता का अँचल' एक संस्मरणात्मक उपन्यास (देहाती दुनिया) का अंश है। इसमें 1930 के दशक के ग्रामीण बचपन का सजीव चित्रण है। मुख्य पात्र 'भोलानाथ' (तारकेश्वरनाथ) अपना ज़्यादातर समय पिता के साथ बिताता है—उनके साथ सोता है, पूजा करता है और गंगा स्नान को जाता है। लेकिन जब एक दिन खेलते समय बच्चों को एक साँप डरा देता है, तो लहूलुहान और डरा हुआ भोलानाथ पिता की गोद की बजाय भागकर अपनी 'माता के अँचल' में छिप जाता है। यह कहानी दर्शाती है कि संकट के समय बच्चे को जो शांति और सुरक्षा माँ के आँचल में मिलती है, वह दुनिया में कहीं और नहीं मिलती।

प्रश्न 1: प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

यद्यपि भोलानाथ का अपने पिता से बहुत अधिक जुड़ाव था, वह उनके साथ ही सोता, जागता, पूजा करता और खेलता था। पिता उसे अपार प्रेम करते थे। फिर भी विपदा (साँप के डर) के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है, इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:

1. **ममता और सुरक्षा की भावना:** बच्चे को माँ की गोद में और उसके आँचल में जो असीम सुरक्षा, ममता और आत्मीयता महसूस होती है, वह किसी और के पास नहीं होती।

2. **संकट का स्वाभाविक आश्रय:** डर या पीड़ा के समय शिशु स्वाभाविक रूप से माँ को ही याद करता है, क्योंकि माँ का स्पर्श उसके हृदय की धड़कन को शांत करता है। माँ उसे गले लगाकर अपनी ममता से उसका सारा डर दूर कर देती है।

प्रश्न 2: आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है क्योंकि बच्चों का स्वाभाविक गुण होता है कि वे अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में सबसे अधिक आनंद का अनुभव करते हैं। जब भोलानाथ रो रहा होता है और वह अपने मित्रों को हँसते-खेलते और मज़े करते देखता है, तो उसकी बाल-सुलभ चंचलता जाग उठती है। खेल का आकर्षण इतना गहरा होता है कि वह अपना दुःख और रोना भूलकर उनके साथ खेलने में मग्न हो जाता है।

प्रश्न 3: पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

पाठ में चित्रित भोलानाथ के बचपन की दुनिया हमारे आज के बचपन की दुनिया से बिल्कुल भिन्न है:

1. **खेल के साधन:** उस समय बच्चे धूल, मिट्टी, कंकड़, पत्ते, दीये और प्राकृतिक चीज़ों से खेलते थे। आज के बच्चे मोबाइल, कंप्यूटर, वीडियो गेम और प्लास्टिक के महंगे खिलौनों से खेलते हैं।

2. **स्वतंत्रता:** तब बच्चे गाँव की गलियों और खेतों में बिना किसी डर के आज़ादी से खेलते थे। आज के बच्चे फ्लैट्स और कमरों में बंद रहते हैं; उन्हें बाहर जाने में असुरक्षा होती है।

3. **प्रकृति से जुड़ाव:** पाठ के बच्चे प्रकृति के बहुत करीब थे (पेड़, पक्षी, नदी, मिट्टी)। आज का बचपन कंक्रीट के जंगलों और डिजिटल स्क्रीन तक सिमट गया है।

Schorbit